

श्रीमद्भगवद्गीता
1930 I

234
Hindu
Stotra.

संस्कृत-ग्रन्थ-संग्रहालय
1930 I

ASIAN ARCHIVES

234
Hrudai
Stotra.

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ विष्णु च नाय विनाय विष्णु
 पाय नमः सर्वविघ्न हर्ज देव सर्व साकिनमासाह
 ॥ **श्रीगणेशाय नमः॥** ॥ पञ्चमः भिजसादने
 लम्प्रीपु विनायकः ए कायसे स्मर निष्प मायु का
 मोर्थ सिद्धय ॥ १ ॥ प्रथमवक्र तु उच ह मदनैदी
 नोयकः द्दमीयै ह्म सुपिंगम ई गजवक्र चतुर्थकः
 ॥ २ ॥ लम्बादने पंचमव मर्ह विकटमवच सफ

मेललनाजिं डे क्रुतु वर्ध नथम ह्मकी ॥ ३ ॥ नवमं लाल
 चन्दु च दहमं तु विनायक एकदहमं गहमपि द्वा
 दहमं तु गजानन ॥ ४ ॥ ए ग द्वादहमनामानि पिसं
 धय प १० नन नच विघ्न ह्मकस्य सर्वा सिद्धि कर्तृ प्र
 ण ॥ ५ ॥ विद्यार्थी लह न विद्या धनार्थी लह न धन
 पुणार्थी लह न पु न मा द्वाथी चापूया पुति ॥ ६ ॥
 उप नु ग ह्मपि सि ए कि युक्त नच नसा सर्व

नृसुत धासिद्धिः चलनं नोय संशयः ॥ १ ॥ अष्टा
 धर्मैश्च कृष्णं नोचि लिखित्वाय समर्पयेत् ॥ नश्यति
 शोणवत् नृसुतं गच्छति सस्यः प्रसादतः ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते
 हागलपति स्म ॥ ३ ॥ प्रहसन् ॥ ४ ॥

योगह्यथमयनमः॥ ॥ योगिधनुवाच॥ ॥ ॐ
ववेज्जवंधी रुवा पू गनदां रुवसादिह प्रजिगीरुव्यु
पी स्वकिथे प्रहनिर्लसगु होमदही रुवसिरुवानि

सुराडोरुं ह्रीं ॥ १ ॥ माहाकालनागीं स्वयं यो कृष्णं
 गिं स्वयं आर्यकृष्णं कनालाएव कुं प्रकान्याए
 कालीं कुमारीं विकार्यां रुद्रं रुद्रकालीं मकरा-
 दित्र्यां ॥ २ ॥ सुजाति सुपद्मं विद्वानद्यत्र्यां मिवा-
 मोक्षवर्जं चैतानां माह्वानां सुनद्या जयैति मिवा-
 कृत्वा गिं यथा धर्मत्रया रुद्रसिंहवाही ॥ ३ ॥ महसप्रियां
 पार्वतीं गुणकालीं मदीया जमानस्ययी ॥ ४ ॥ नित्यसगी

मनकामदा गुधीं सुनेहायमानां कुमारीं प्रवेशां रुद्र
द्राक्षत्रयो ॥ ४ ॥ नमस्त्वं नरस्थं उमासन्वसस्थं
प्रचक्ष्मिंस्वकीर्तिं प्रणकायत्रयां कलादि द्रुपाकं युग
स्थं सुमकीं शिकालाक काली रुद्रमनुस्वत्रयी
॥ ५ ॥ विधेयीं प्रचक्ष्मिंस्वकीर्तिं सुवर्चं रुद्रगुप्ताय रुद्र
न्या जनिस्वाकसस्थं रुद्रजीवत्रयी रुद्रजन्यधे
यीं रुद्रा रुद्रायुगी रुद्रप्राक्षत्रयी ॥ ६ ॥ लसद्यागिचि

कां न विदयामा लसच्चिन्ता ग्यर्धं महायागिर्वद्यां
रवीन्द्रायामा रुद्रायामा रुद्रायामा रुद्रायामा रुद्रायामा
द्राक्षत्रयो ॥ ७ ॥ नदिसेधुस्वस्थं सुविद्वत्समहायुग
रुद्रहचिन्तास्थं शिवायावजावहनप्राक्षत्रयी सुने
धायमानां विद्वत्प्रचक्ष्मिंस्वकीर्तिं रुद्रप्राक्षत्रयी ॥ ८ ॥ नि
ग्रहं रुद्रानां सुने प्रहृष्टीकं सदाधायमानां विद्व
का पत्न्यै विद्वत्स्वचिन्ता विद्वत्काश्य नन्वान

श्री

जोतिर्लाल यागु स दू सैन्यालि १०२० कि माघ अदि
जोतिर्लाल यागु म फर विक्रमादीन्यस १९५८

जोतिर्लाल यागु

1930

I

आश्विन संवत् १९३०

1930

I

वावस मायो भग्नपासनसु ॥ ६ ॥ सुनाय्य प्रपाद्य सुव
 दकनैति का अरु नरंग नयो ल्वमेव अरुतिस्त्रिस्त्रि
 भवध्वनीस्त्रि चतुष्ठा चवाही ल्वमाया मनाशो एत
 हरुद्रही ॥ १० ॥ प० ० एरु युक्तु भिवागिभिवात्मा स
 धर्मकामानु मनावीचि नार्थे प्र सुस्त्रिच मुक्तिं क
 र्य सर्वसिद्धिं लह न्मा रकाशो विचाना न धीजो ॥ ११ ॥
 अगिणी हिमवत्स्वदृष्ट आगु अश्वनी स्का रसंस्प
 क्षिप्नु ॥ ॥

आग ६१ अभयनमः ॥ ॥ गीगम दान प्रियाग च गीगम सा
 गत्र संगम सर्व उडु लह गीगम हनि गीगम नमस्तु न ॥ ११ ॥
 जय किर्म गला कालो रुद्र कालो काया लिखी दुर्गम रु
 मा भिवाधम ॥ ॥ स्वाहा स्वधम नमस्तु ॥ १ ॥ ॥
 मयूका अनदस्वानो गमान्का गिठम गेयि य अका
 ति पुन दाने गुरु ली भिवद धर्मे ॥ १ ॥ ॥
 मूल प्रजा गथ विष्णु सायाद वमह ध्वन पण पण

सर्वदेवाय नमः ॥ १ ॥

भक्तकाले तज्जगत्पयर्न पदनाहं सुन सी ॥ विष्णु

धर्म गगनसदृश ॥ मघवर्धं सुलोकं लोकाकारक

मलनयनी ॥ योगिनी ध्यानगम्य वन्द्य विष्णु एव एव हर्ष

सर्वलोकैकनाथ ॥ १ ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥ ह्याम् ॥ ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥ देवाय नमः ॥ देवकी

नन्दनायक नन्दराजपुत्रमाय नमः ॥ विष्णु

मानमः ॥ १ ॥ शुभम् ॥ ह्याम् ॥ ॥ योगिनी ॥ ॥

यनमः ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ देवाय नमः ॥ देवकी

एन्दुर्न सदावसक्तं हृदयानविष्टं हर्ष एवानीस

हितनमासि ॥ १ ॥ ॥ श्रीनामचन्द्राय नमः ॥ ॥ श्री

योगिनी तया वर्तते दृगमर्त हृत्वा सुगमका ॥ नवे अहि ह

नर्त जगत्पु मन्त्रे सुशिव स एव न वालिनिग्रह

र्त स मुदु तत्रर्त लोका पुनिदाहर्त यच्छाडावधकु

॥ १ ॥ ॥ श्रीनामचन्द्राय नमः ॥ ॥ श्री